Om Jai Jagdish Hare

ॐ जय जगदीश हरे

NityaPaath
nityapaath.com/om-jai-jagdish-hare/

REFRAIN · टेक

टे॰ ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु! जय जगदीश हरे॥
भक्तजनोंके संकट छिनमें दूर करे॥ ॐ॥

VERSES · आरती

1 जो ध्यावै फल पावै, दुख विनसै मनका॥ प्रभु०॥
सुख-सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका॥ ॐ॥

2 मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी॥ प्रभु०॥
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥
ॐ॥

3 तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी॥ प्रभु०॥
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ॥

4 तुम करुणाके सागर तुम पालन-कर्ता॥ प्रभु०॥
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ॥

5 तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती॥ प्रभु०॥
किस बिधि मिलूँ दयामय! मैं तुमको कुमती॥
ॐ॥

6 दीनबन्धु दुखहर्ता तुम ठाकुर मेरे॥ प्रभु०॥
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ॥

7 विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा॥ प्रभु०॥
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतनकी सेवा॥ ॐ॥

Text checked against: Gita Press, Gorakhpur: Aarti Sangrah (code 153, 80th reprint, Samvat 2075), 'भगवान् जगदीश्वर'. Meanings, audio and all scripts at nityapaath.com/om-jai-jagdish-hare/